नारायण मूर्ति की कंपनी ने ''दमनपूर्वक'' ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कंपनी द्वारा, कर्मचारियों की गुणवत्ता, क्षमता और कार्य परीक्षणों के बारे में किए गए दावों के बावजूद, आईटी कर्मचारी संघ ने कहा कि यह कदम उचित नहीं था। यूनियन ने कहा, ''इन कर्मचारियों का कई बार साक्षात्कार लिया गया था और कई परीक्षाएं पास करने के बाद उन्हें कंपनी में शामिल किया गया था।

इसके अलावा, यह भी आरोप लगाया गया है कि इन्फोसिस ने उन्हें सैपरेशन एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया। कर्मचारियों को जिस एग्रीमैंट पर साइन करने के लिए बाध्य किया गया उसमें बर्खास्तगी के कारणों का उल्लेख नहीं था, जैसा कि इन्फोसिस दावा कर रही है।

कर्मचारी यूनियन ने इन्फोसिस मैनेजमैंट की दबाव बनाने की रणनीति की भी निंदा की, जिसके तहत कर्मचारियों को कागज़ात पर हस्ताक्षर करने और बाहर जाने के लिए डराने के लिए बाउंसरों और सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया था। कर्मचारियों को कैंपस छोड़ने के लिए कोई समय नहीं दिया गया और उनके नाम रोल से काटे जाने के बाद उन्हें 6 बजे से पहले कैंपस खाली करने को कहा गया।

यूनियन ने कर्नाटक सरकार से इस कथित सख्त शोषण को समाप्त करने और कंपनी के खिलाफ शीघ्र कार्रवाई करने की अपील की है।

अखिलेश...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहानी अलग है।

विपक्षी दलों को यह बात हजम नहीं हो रही है कि ममता बनर्जी बंगाल और देश के बाकी हिस्सों के लिए चुनावी गठबंधन के लिए अलग मानक रख रही हैं।

चाहे जो भी हो, दिल्ली चुनावों में भाजपा की किस्मत का तेजी से पलटना राष्ट्रीय आम चुनावों के मुकाबले पूरी तरह से अलग था। ममता बनर्जी इन घटनाक्रमों को लेकर निस्संदेह चिंतित हैं, लेकिन राहुल गांधी की पराजय से उन्होंने राहत की सांस ली है।

वास्तव में यह सत्य है कि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी की पूरी तरह से हार ने भाजपा पर से उभरते राष्ट्रीय विपक्षी गठबंधन का दबाव हटा दिया। चुनाव परिणामों ने विपक्ष को विभाजित कर दिया है और इससे ममता बनर्जी के विपक्षी राजनीति में विघ्न डालने की भूमिका का महत्व भी लगभग खत्म हो गया है।

वह अपने नेतृत्व में विपक्षी एकता नहीं ला सकतीं, क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर उनके नेतृत्व की कोई पूछ नहीं है, वह केवल एक क्षेत्रीय पार्टी की नेता हैं।

इस स्थिति में, भाजपा उन्हें लाइफ लाइन देना बंद कर देगी।

बंगाल में यह माना जाता है कि भाजपा और तृणमूल कांग्रेस एक-दूसरे के सहयोगी हैं। यही कारण है कि केंद्रीय एजेंसियाँ तृणमूल कांग्रेस के कई घोटालों और उसके कुछ प्रमुख नेताओं के खिलाफ पूरी तरह से कार्रवाई नहीं कर रही हैं।

अब ममता बनर्जी के लिए एक नई समस्या सामने आ रही है। तृणमूल कांग्रेस और सत्तारुढ़ पार्टी द्वारा राज्य पुलिस प्रशासन की मदद के बाद भी प्रशिक्षु डॉक्टर के दुष्कर्म व हत्या के सबूतों से छेड़छाड़ के खिलाफ चल रहा जनांदोलन शांत नहीं हो रहा है।

जोधपुर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रयोग करते हुए उन्हें कुलपति पद से तत्काल प्रभाव से निलम्बित किया है।

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908